International Indexed & Referred Research Journal, ISSN- 2250-2556; VoL. I *ISSUE-1, April, 2012.

शोध पत्र- मनोविज्ञान

किशोरावस्था एवं वृद्धावस्था में मृत्यु-चिंता का मनोवैज्ञानिक अध्ययन

* डॉ. ममता अवस्थी ** कु. अनामिका शुक्ल

eR;q dk Hk; ikdfrd :i ls iR;sd 0;fDr esa fufgr gksrk g] pkgs og fdruk Hkh mPp Lrjh; 0;fDr D;ksa u gksA eR;q dk Hk; loZxzkg~; Loj{kk dk Hkko dk in'kZu dk eyiofr gSA vf/kdka'k 0;fDr eR;q ds fo"k; esa ,o viuh 0;fDrxr x.kk ds fo"k; esa 'kk;n gh lkprs gSA lkekU; ,oa vkjkeng thou ;kiu ds fy, eR;q Hkko dk neu vko';d gSA ;gh dkj.k g fd eR;q ds djhc vuHko ikIr djus okys 0;fDr eR;q dh ;FkkFkZrk dk tkurs g], Hkh viuh thou dh ikFkfedrkvksa ds fo"k; esa lkprs gSA eR;q dk Hk; fdlh n?kZVuk ikuh esa Mcus rFkk okgu n?kZVuk esa xHkhj :i ls ?kk;y gksus esa Hkh gksrk gSA ftles mlds thou dks [krjk egl`l gksrk gSA thou esa ge vk'kkoknh Hkko ls viuh mnns'; dh ikfIr ds fy, fd;k'khy jgrs gSA vr esa thou dh ;g nkSM+ eR;q ds lkFk :d tkrh gSA

Hkfedk %&

मृत्यु भाव भौतिक एवं मनो–वैज्ञानिक स्थिति है जिसे शरीर एवं भावनात्मक व्यवहार को संयुक्त कर बेचैनी, भय एवं परेशानी की स्थिति उत्पन्न करती है इसे भय से अलग कर मृत्यु भाव से देखा जा सकता है, जिसे चेतावनी के रूप में लिया जा सकता है। भय एक प्रकार से कठिन परिस्थितियों से पलायन की भावना रखती है। इसके दूसरे दृष्टि को देखा जाये तो मृत्युभाव भावी साकारात्मक भवनाओं का सामना करने की तेयारी है। यह र्वमान एवं भविष्य के खतरो के बीच में अंतर अंकित करता हैं चिंता सामान्य दुर्घटनाओं के प्रति सामान्य प्रकिया है। चिंता तनाव की स्थिति है। यह भावी तनाव या दुश्चिंता का चिन्ह है। यह मानव की कठिन परिस्थितियों के संचालन हेतु तैयार करती है। दुर्घटना अधिक हो जाने पर असमंजस्य की स्थिति हो सकती है। वर्तमान युग चिंता का युग है।

मृत्यु की चिंता एक ऐसी चिंता है, जो अधिकतर व्यक्तियों में विद्यमान रहती है। अलग–अलग परिस्थितियां होने के कारण चिंता का स्तर कम या ज्यादा भी होता रहता है। जब व्यक्ति सामान्य रहता है तो मृत्यु के चिंता का स्तर कम होता है तथा जब व्यक्ति अस्वस्थ रहता है तो मृत्यु की चिंता का स्तर ज्यादा हो जाता है। कई व्यक्ति थोड़ी सी गलती होने पर भी आत्म–नियंत्ररणो देते हैं। ऐसे व्यक्तियों में समायोजन की क्षमता कम होती है।

^^orZeku 'kks/k dk;Z dk mn~ns';**

मृत्यु चिंता व्यक्ति के विचारों से है कि मृत्यु के पश्चात् हमारा नया जीवन प्रारंभ होगा। वे मृत्यु से अधिक भयभीत नहीं होते है। वे शांत और निश्चिंत रहते है। कुछ व्यक्ति मृत्यु को जीवन का अंत समझते है, वे मृत्यु चिंता से भयभीत रहते हैं। अतः मृत्यु चिंता एक सामान्य लक्षण है, जो आधुनिक युग के सभी व्यक्तियों मे पाया जाता है। इस दिशा में एक महत्वपूर्ण शोध किया गया। अतः पूर्ण अनुसंधानों एवं पत्रों में प्रकाशित लेखो के अभाव पर ''कि क्या किशोरावस्था एवं वृद्धावस्था मृत्यु चिंता को प्रभावित करती है ? शोध प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास किया गया है।

iwoZ vuqla/kku

मृत्यु चिंता पर समय–समय पर कई अनुसंधान कार्य किये गये। जिसके बारे में अलग–अलग मनोवैज्ञानिक एवं विद्वानों में अपने अलग–अलग मत दिये हैं। भगवतगीता के अध्याय – 2 में अंकित है :– ''कि जन्म लेने वाले व्यक्ति की मृत्यु निश्चित है। मृत्यु प्राप्त व्यक्ति का नवजीवन भी निश्चित है। अतः तुम्हें शोक करने की आवश्यकता नहीं है। जिस प्रकार मानव पुराने वस्त्रों को उतारकर नवीन वस्त्र ग्रहण करता है, उसी प्रकार जीवात्या पुराने शरीर को त्यागकर नवजीवन में नया शरीर धारण करता है।''

P.P. Won dgrs g® – कि ''जीवन–मृत्यु एक नाटक है। मनुष्य काफी हद तक मृत्यु से भयभीत रहता है और मृत्यु से मुक्ति पाने के लिए वह हद तक चेतन प्रयास एवं अचेतन बचाव के उपाय सोचता रहता है। मृत्यु को हम किस दृष्टि से देखते है एवं उसके पूर्ण प्रभाव की उत्सुक्ता हमारे जीवन में किस प्रकार रहती है। वह किसी भी साकारात्मक और किसी में नकारात्मक भाव लिए हुए निहित होती है।''

Butter (1975) ds vuqlkj ® – ''कई वृद्ध मृत्यु का स्वागत करते है, ये सोचकर कि रूक एक नया जीवन उनका इंतजार कर रहा है।''

Jong (1987) ds vuqlkj ® – ''इन्होने अपने अध्ययन में मृत्यु के व्यय व धार्मिकता के संबंध बताया कि हर रोज चर्च जाने वाले समय से पहले मृत्यु के प्रति नकारात्मक प्रतिक्रिया दी गई।''

Khanna (1988) ds vuqlkj ®–उन्होंने बताया कि ‶Schizophrenics से ज्यादा मृत्यु चिंता पाई जाती है।

Ferpz (1987) ds vuqlkj ® – कैंसर पीड़ित लोगों पर मृत्यु चिंता का आयु पर प्रभाव का अध्ययन किया व पाया 30 वर्ष से कम आयु वालों में मृत्यु चिंता का स्तर 50 वर्ष से ज्यादा वालों की तुलना में अधिक पायी गई।

dkyu ds vuqlkj %& ''भय और आशंका की आयन्यीकृत अनुभूति ही मृत्यु चिंता है।''

Akher Husen and Paguveer Swarup ds vuqlkj :– ''मदीरा या ध्रुमपान करने वाले व्यक्तियों में मृत्यु चिंता का स्तर

ज्यादा होता है।''

bfy;V fy[kr% g] %–कि '' मैं मर नहीं रहा हूं जो अन्य के साथ होता है, वही किसी भी क्षण मेरे साथ भी हो सकता है।

midYiuk

1.महिलाओं में मृत्यु चिंता का स्तर पुरूषो की अपेक्षा ज्यादा होगा।

2.किशोरावस्था की अपेक्षा वृद्धावस्था में मृत्यु चिता अधिक होगी।

'kks/k fof/k %&

वर्तमान शोध कार्य में ''सरगुजा'' जिले के किशोरावस्था एवं वृद्धावस्था के किशारे–किशोरियों एवं महिला–पुरूषों की

U;k; forj.k i{k:i

eR;q fpark ¼120½

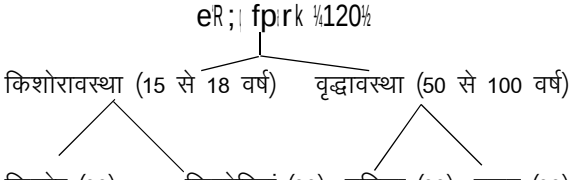

किशोरावस्था (15 से 18 वर्ष) वृद्धावस्था (50 से 100 वर्ष)

किशोर (30) किशोरियां (30) महिला (30) पुरूष (30)

मृत्यु–चिंता का मापन करना है। जिस हेतु 120 न्यायदर्शी को यादृच्छिक विधि द्वारा चुना गया। मृत्यु चिंता के 30 किशोर एवं 30 किशोरियों को तथा 50 से 100 वर्ष के वृद्ध महिला एवं पुरूषो को यादृच्छिक विधि से चयनित किया गया। मृत्यु चिंता मापन हेतु Dr. (Mrs.) Vijaya Laxmi Chauhan and Dr. (Mrs.) Gayatri Jiwari द्वारा निर्मित मृत्यु चिंता मापनी का उपयोग किया गया। जिसमें कुल 20 प्रश्न है। जिसका उत्तर प्रयोज्य को ''हाँ'' व ''नहीं'' में देना था। अंको की गणना सकारात्मक और नकारात्मक दृष्टि से की गई। परीक्षण को करने में समय की कोई पाबंदी नहीं है। इसका इसका मुख्य उद्देश्य किशोरावस्था एवं वृद्धावस्था में मृत्यृ चिंता का मापन करना है। परिणामों की गणना और सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रमाणित विचलन, क्रांतिक अनुपात की गणना की गई।

ifj.kke %&

तालिका 1 में स्त्रियें का मध्यमान 26.43 एवं पुरूषों का मध्यमान 22.4 प्राप्त हुआ जो कि M=26.43>22.4 अधिक है। पुरूषों के मध्यमान प्राप्तांक अर्थात् महिलाओं में पुरूषों की अपेक्षा मृत्युंचिंता अधिक पाई जाती है। क्रांतिक अनुपात 11.5 प्राप्त हुआ जो कि तालिका मृत्यु से P=0.01 - 2.63<11.5 अधिक है। अतः प्रथम उपकल्पना सिद्ध हुई कि महिलाओं में पुरूषों की अपेक्षाकृत मृत्यु चिंता अधिक होती है, सत्य सिद्ध हुई।

n[k rkfydk 2

तालिका 2 में प्राप्त परिणामों के अनुसार वृद्धावस्था का मध्यमान प्राप्तांक = 25.5>23.43 प्राप्त हुआ तथा किशोरावस्था का मध्यमान 23.43 प्राप्त हुआ तथा क्रांतिक अनुपात 3.189 प्राप्त हुआ जो कि 0.05 = 1.98 तथा 0.01 = 2.63 से अधिक है। अतः हमारी उपकल्पना किशोरावस्था की अपेक्षा।

ifj.kkeksa dh fo'ys"k.k ,oa 0;k[;k %&

महिलाओं मे पुरूषों की अपेक्षाकृत मृत्यु चिंता अधिक होती है, क्योंकि महिलाएं पुरूषों की अपेक्षाकृत अधिक भावुक होती है, उन्हें परिवार के प्रति जिम्मेदारी निभानी पड़ती है। पुरूषों के अभाव में महिलाओं में सतान का पालन–पोषण करने में कई कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है जिसकी कल्पना कर अधिकांशतः महिलाओं असुरक्षा की भावनाओं में घिर जाती है, जो चिंता का मृख्य कारण है। महिलाएं पुरूषों की अपुक्षाकृत अधिक परिश्रमी एवं सहनशील होती है। संतान के प्रति आयें पुरूषों की संख्या अपेक्षा ममता अधिक होती है। अधिकांशतः भावुक होने के कारण महिलाएं सोचती है कि उनकी मृत्यु के बाद परिवार बिखर जाएगा। भारतीय समाज में आज भी महिलायें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नहीं है।

जिसके कारण उन्हें अपनी दैनिक जीवन की आवश्यकताओं तथा परिवार के भरण पोषण के लिये दूसरो पर निर्भर रहना पड़ता है। जिसके कारण उन्हें सदैव असुरक्षा के विचार घेरे रहते हैं जो उनमें मृत्यृ प्रति चिताएं व भय को बढ़ा देते है। वृद्धावस्था में किशोरावस्था की अपेक्षा मृत्यु चिंता अधिक होती है, क्योंकि किशोरावस्था मे मनुष्य में उमंग व उत्साह अधिक रहता है, वे आशावादी होते है।

उसे मृत्यु की चिंता नहीं होती है। किशोरावस्था में हर कठिनाईयों का सामना करने एवं जोखिम करने का साहस होता है। उनके सामने जीवन का लक्ष्य व उज्जवल भविष्य होता है

rkfydk & 1 fyax dk vk/kkj ij efgykvksa o iq:"kksa esa eR;q fpark dk e/;eku ikIrkad] izekf.kd fopyu] rFkk Økfrd vuqikr

लिंग	N (प्रतिदर्श)	M (मध्यमान)	SD (प्रमाणिक विचलन)	SEd (प्रमाणिक त्रूटि)	CR (क्रांतिक अनुपात)	Signifience (सार्थकताएं)
महिला	60	26.43	3.37	0.37	11.5	सार्थक अंतर
पुरूष	60	22.4	4			

P value = 0.05 = 1.98<11.5

0-01 = 2.63<11.5

rkfydk & 2 fd'kkjkoLFkk ,oa o)koLFkk esa eR;q fpark dk e/;eku ikIrkad] izekf.kd fopyu rFkk Økfrd vuqikrA

लिंग	N (प्रतिदर्श)	M (मध्यमान)	SD (प्रमाणिक विचलन)	SEd (प्रमाणिक त्रूटि)	CR (क्रांतिक अनुपात)	Signifience (सार्थकताएं)
वृद्धावस्था	60	25.5	3.53	0.35	5.9	सार्थक अंतर है
किशोरावस्था	60	23.43	3.86			

P value = 0.05 = 1.98<5.90
0.01 = 2.63 < 5.9

उनके आंखो के भावी जीवन के सपने होते है। संसार में जितनी साहसिक कार्य हुए है उनमें किशारों का योगदान सर्वाधिक रहा है। लेकिन वृद्धावस्था में जीवन पूर्णता की ओर पहुंचने लगता है। जीवन में उत्साह व उमंग में कमी आने लगती है। शारीरिक अक्षमता एवं आर्थिक स्त्रोंतों की कमी के कारण वे निराशा की ओर अग्रसर होते चले जाते है, उन्हें भविष्य अंधकारमय नजर आने लगता है। वे अपना समय अतीत के चिंतन में बिताते है। वर्तमान के साथ उनके विचारों का तालमेल भी बनता है, वे प्रत्येक मौजूदा वस्तुओं की आलोचना किया करते है। वे हमेंशा सोचते है कि मेरे मृत्यु के बाद परिवार कैसे चलेगा। स्वास्थ्य में गिरावट आने पर उनके सामने मृत्यु ही दिखायी देने लगती है। इसीलिए किशोरावस्था की अपेक्षा वृद्धावस्था में मृत्यु चिंता अधिक होती है।

fu"d"k

1. महिलाओं में पुरूषो की अपेक्षाकृत मृत्यु चिंता अधिक होती है। 2. वृद्धावस्था में किशोरावस्था की अपेक्षा अधिक मृत्यु चिंता होती है।

** विभागाध्यक्ष मनोविज्ञान विभाग, होली क्रॉस वुमेन्स कॉलेज, अम्बिकापुर, ** एम. ए. अतिम वर्ष*

संदर्भ ग्रंथ

1. Beauleeu R (1986) on the Origin of death Anxiety, Primal Psychotherapy page http:// primla - page com. 2. Becker, E (1973), The denial A perspective in psychiatry and anth rapalogy New York: siman and Schuster. 3.http:// www.premila page com chouhan Vijaya laxmi and ciwari gayatri (Death amity manual) 4.Fisher R.L. and Fisher S. (1993) The Psychology of Adaptation to Absurdity :Tactics of make believe Hillrdale, NJ : L Eriliam Associates. 5.Husain Akhtar. Swarup Raghuvir, A study of Death Anxiety in smokers and alcoholics, Praachi I of Psycho Cultural Dimenions. 6.Janav A (1983), Imprints : The ifelong effects of the birt experience : New York : Coward Mccann inc. 7. http://www.deathreference.com/A-Bi/Anxiety and fear.html page of 7 8. Kubler Ross E on Death and Dying, New York Macmil lan (1969) 9. Liedioff J (1977), the continuum concept, New York : Perseus Books. 10. Oxford Dictionary, The (1985), New Delhi : India Effset Press. 11. Rattan, M.A. CHT PLT Regd The question about Death and Death Anxiety by Anubhuti Hypnogenesis. 12. Religion and Psychology - Journal of the Indian Acadamy of Appied Psychology (1994) July 20. Page No. 145-152, Reference 19. 13.The development of Behaviour during Adolescence Adultage and old age. Chapter - 12, Page No. 406-410 14. Management of Death Anxiety, www.google.com 15. Phszcynski, T.Grcenbeng. J Soloman.S and Hamilton j (1991) A Terror. 16. www.google.com. The psychology of death : by Robert Kastenliaun. 17.http:// wikipedia.org/ wiki/Anxiety 18. Kku योग – विवेकानंद साहित्य पेज संख्या 64–65